सन्धि

चन्द्रगुप्त भारतीय

सन्धि

अच्-सन्धि {स्वर-सन्धि}

- दीर्घ – {अकः सवर्णे दीर्घः 6-1-10}
- गुण - {अदेङ् गुणः – 2-1-2} {आद् गुणः – 6-1-87}
- वृद्धि - {वृद्धिरादैच् – 1-1-1} {वृद्धिरेचि – 6-1-88}
- यण् - {इको यणचि – 6-1-77}
- अयादि - {एचोऽयवायावः – 6-1-68}
- पूर्वरूप - {एङः पदान्तादति – 6-1-109}
- पररूप - {एङि पररूपम् – 6-1-94}
- प्रकृतिभाव - {प्लुत-प्रगृह्य -अचि नित्यम् – 6-2-125}
- 1. प्लुत-सन्धि - {दूराद्धूते च – 8-2-84}
- 2. प्रगृह्य-सन्धि - {ईदूदेद-द्विवचनं प्रगृह्यम् – 1-1-11}

हल्-सन्धि {व्यजन-सन्धि}

- श्चुत्व - {स्तोः श्चुना श्चुः – 8-4-40}
- ष्टुत्व - {(स्तोः) ष्टुना ष्टुः – 8-4-41}
- जश्त्व - {झलां जशोऽन्ते – 8-2-39} {झलां जश् झशि – 8-4-53}
- चर्त्व - {खरि च – 8-4-54}
- 1. अनुस्वार - {मोऽनुस्वारः – 8-3-23}
- 2. अनुस्वार - {नश्चापदान्तस्य झलि – 8-3-24}
- 1. परसवर्ण - {अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः – 8-4-58}
- 2. परसवर्ण - {वा पदान्तस्य – 8-4-59} – (विकल्प)
- लत्व - {तोर्लि – 8-4-60}
- छत्व - {शश्छोऽटि – 8-4-63}
- च-आगम - {छे च – 6-1-73}
- अनुनासिक-आगम - {ङमो ह्रस्वादचि ङमुण् नित्यम् – 8-3-32}
- र् –लोप - {रो रि – 8-3-14} {ढ्रलोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः –6-3-111}
- षत्व-विधान - {आदेश-प्रत्यययोः – 8-3-59}
- णत्व-विधान - {रषाभ्यां नो णः समानपदे – 8-4-1} {अट्-कु-प्वाङ्-नुम्-व्यवायेऽपि – 8-4-2}
- झयत्व - {झयो होऽन्तरस्याम् – 8-4-61}

विसर्ग-सन्धि

- स-श-ष-त्व - {विसर्जनीयस्य सः – 8-3-34}
- उत्व -{अतोरोरप्लुतादप्लुते–6-1-114} {हशि च – 6-1-115}
- रुत्व - {ससजुषो रुः – 8-2-66}
- लोप -{रो रि – 8-3-14} {ढ्रलोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः –6-3-111}
- अलुप - {}

धन्यवाद

चन्द्रगुप्त भारतीय